سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

सूरह आ़दियात मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ (1)

कसम है उन (घोड़ों) की जो हांफते (फुंफकारते) हुए सरपट दौड़ते हैं।

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ (2)

फिर जो (अपनी टापों से) ठोकर मारकर (प्रहार कर) चिंगारियां निकालते हैं।

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ (3) فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ (4)

फिर जो भोर (सुबह - सवेरे) धावा बोलते हैं।[3] फिर जो उसमें गर्द – गुबार (धूल) उड़ाते हैं।[4]

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ (5)

फिर जो उसी (अवस्था) में दल (शत्रु - समूह) के बीचो - बीच जा घुसते हैं।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ (6)

निःसंदेह इंसान अपने रब (पालनहार) के प्रति (बड़ा) कृतघ्न (ना-शुक्रा) है।

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ (7)

और निःसंदेह वह इस पर (स्वयं) साक्षी (गवाह) है।

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ؕ 8

और निःसंदेह वह धन के मोह में (बहुत) दृढ़ (कठोर) है।

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ 9

तो क्या (वह) नहीं जानता ? जब उधेड़ (निकाल) दिया जाएगा, जो कब्रों में है।

وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ 10

और उजागर कर दिया जाएगा (वो भेद) जो सीनों (हृदयों/दिलों) में हैं।

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ع 11

निःसंदेह उनका रब उस दिन उनसे 'बाख़बर' (पूर्ण परिचित) होगा।

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ

सूरह अल-क़ारिया मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَلْقَارِعَةُ ۙ(1) مَا الْقَارِعَةُ ۚ(2)

खड़खड़ाने वाली ! (भीषण आघात) [1] क्या है ? (वह) खड़खड़ाने वाली ! (भीषण आघात) [2]

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ(3)

और तुम्हें क्या पता, क्या है ? (वह) खड़खड़ाने वाली ! (भीषण आघात)

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ(4)

जिस दिन लोग बिखरे हुए पतंगे जैसे हो जाएंगे।

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ(5)

और पर्वत (पहाड़) धुनी हुई रंगीन ऊन के समान (जैसे) हो जाएंगे।

فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ(6)

तो बहरहाल (वह) जिसके पलड़े (नेकी / सत्कर्मों के तौल) भारी होंगे।

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ؕ(7)

तो वह मनभाते (आनंदमय) जीवन में होगा ।

وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ (8)

और रहा वह जिसके पलड़े (नेकी / सत्कर्मों के तौल) हल्के होंगे।

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ؕ (9)

तो उसकी माँ (अंततः वास्तविक ठिकाना) 'हाविया' होगी।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ (10)

और तुम्हें क्या पता, क्या है ? वह ! (हाविया)

نَارٌ حَامِيَةٌ ۢ (11)

दहकती हुई (अत्यंत तप्त) आग !

سُوۡرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ

सूरह तकासुर मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ ⑴

तुम्हें उलझा दिया (विमुख / असावधान कर दिया) बाहुल्य की होड़ (और अधिक पाने की लालसा) ने।

حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ ؕ ⑵ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ ⑶

यहां तक कि तुमने कब्रें जा देखीं (स्वयं जा पहुंचे)। [2] कदापि नहीं! शीघ्र (जल्द) ही तुम जान लोगे। [3]

ثُمَّ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ؕ ⑷ كَلَّا لَوۡ تَعۡلَمُوۡنَ عِلۡمَ الۡيَقِيۡنِ ؕ ⑸

फिर! कदापि नहीं! शीघ्र (जल्द) ही तुम जान लोगे। [4] कदापि नहीं! यदि तुम निश्चित ज्ञान जानते! [5]

لَتَرَوُنَّ الۡجَحِيۡمَ ۙ ⑹

तुम अवश्य भड़कती हुई आग (जहन्नम) को देखोगे।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيۡنَ الۡيَقِيۡنِ ۙ ⑺

फिर! तुम उसे अवश्य प्रत्यक्ष निश्चय (निश्चय की आंख) से देखोगे।

ثُمَّ لَتُسۡـَٔلُنَّ يَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِيۡمِ ع ⑻

फिर! तुमसे उस दिन अवश्य पूछा जाएगा नेमतों (सुख सुविधाओं) के बारे में।

سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ

सूरह अस्र मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

وَالْعَصْرِ ۙ (1)

काल (गुज़रते समय) की कसम !

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ (2)

निःसंदेह इंसान हानि में है।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ ۵

सिवाय (केवल) उनके जो ईमान लाए, और सत्कर्म किए, और एक - दूसरे को (आपस में) सत्य की उपदेश की,

وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ع (3)

और एक - दूसरे को (आपस में) धैर्य की उपदेश की।

سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ

सूरह हुमज़ह मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۙ (1)

विनाश (बर्बादी / विपत्ति) है प्रत्येक मुंह पर ताने देने वाले (कटु-भाषी) और पीठ पीछे बुराई करने वाले (चुगलखोर) के लिए।

الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ (2) يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ (3)

वह जो (जिसने) धन संचित (जमा) किया और उसे गिन-गिन कर रखा।[2] वह समझता है कि उसका धन उसे सदैव जीवित (अमर) रखेगा।[3]

كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ (4)

कदापि नहीं ! वह अवश्य (निश्चय ही) 'हुतमा' (चूर्णित कर देने वाली) में फेंका जाएगा।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ (5)

और तुम्हें क्या पता, 'हुतमा' क्या है?

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ (6) الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ (7)

अल्लाह की भड़काई हुई (प्रज्वलित) आग![6] जो हृदयों (दिलों) तक जा पहुंचती (चढ़ जाती) है।[7]

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ (8) فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ (9)

निःसंदेह वही (आग) उन पर बंद कर (घेर) दी जाएगी।[8] लंबे - लंबे स्तंभों में (घिरे / जकड़े हुए)।[9]

سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ

सूरह फ़ील मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ط ①

क्या तुमने नहीं देखा? तुम्हारे पालनहार (रब) ने हाथी वालों के साथ क्या किया !

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ لا ②

क्या उसने उनकी चाल (कपट योजना) को विफल नहीं कर दिया?

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ لا ③

और उन पर समूह (झुंड के झुंड) पक्षी भेजे

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ لا ص ④

(जो उन पर) पकी मिट्टी से (बने) कंकड़ीयां (पत्थर) मारते (बरसाते) थे।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ع ⑤

तो उन्हें(ऐसा)बना दिया जैसे चूर्णित (खाया हुआ) भूसा।

سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ

सूरह क़ुरैश मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ (1)

क़ुरैश को अभ्यस्त करने (परचाने / मानूस करने) के कारण

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ (2)

(अर्थात) उनको शीत (सर्दी) और ग्रीष्म (गर्मी) की यात्रा का अभ्यस्त (करने के कारण)।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ (3)

तो (उन्हें) चाहिए कि वे इस घर (काबा) के मालिक (रब) की उपासना (बंदगी) करें।

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ ٥

जिसने उन्हें भूख से (बचाकर) भोजन कराया

وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۧ (4)

और उन्हें भय (डर) से सुरक्षित (निश्चिंत) किया।

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ

सूरह माऊन मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ط ①

क्या तुमने (उसे) देखा? वह जो प्रतिफल (क़यामत/बदले के दिन) को झुठलाता (नकारता) है।

فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ لا ②

यह वही है, जो अनाथ को धक्के देता (धुतकारता) है।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ط ③

और विपन्न (निर्धन) को भोजन कराने पर (को) प्रेरित नहीं करता।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ④ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ لا ⑤

तो उन नमाजियों की विपत्ति (बर्बादी/विनाश) है। जो अपने नमाज से असावधान (भटके हुए) हैं।

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ لا ⑥

वे जो दिखावा करते हैं।

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ع ⑦

और जो साधारण (मामूली) सी (वस्तु की) मदद भी रोकते हैं।

سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ

सूरह कौसर मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ط (1)

(हे नबी ﷺ!) निसंदेह हमने तुमको "कौसर" (अपार भलाई) प्रदान की।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ط (2)

तो (अपने) पालनहार (रब) के लिए नमाज़ पढ़ो और बलिदान (कुर्बानी) करो।

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ع (3)

निसंदेह तुम्हारा शत्रु ही जड़ - कटा (निर्वंश / बे नाम) रहेगा।

سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ

सूरह काफ़िरून मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ (1)

(हे नबी ﷺ) कहो ! हे काफ़िरों (अस्वीकार करने वालों)

لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ (2)

मैं (उसकी) उपासना (**बंदगी**) नहीं करता, जिसकी तुम उपासना करते हो।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ (3)

और ना तुम (उसकी) उपासना करने वाले हो, जिसकी मैं उपासना करता हूँ।

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ (4)

और ना मैं (उसकी) उपासना करने वाला हूँ, जिसकी तुमने उपासना की।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۭ (5)

और ना तुम (उसकी) उपासना करने वाले हो, जिसकी मैं उपासना करता हूँ।

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۧ (6)

तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म (दीन) और मेरे लिए मेरा धर्म (दीन)।

سُورَةُ النَّصۡرِ مَدَنِيَّةٌ

सूरह नस्र मदीना में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ ۙ (1)

(हे नबी ﷺ!) जब अल्लाह की सहायता और विजय (फ़तह) आ पहुंचे।

وَرَاَيۡتَ النَّاسَ يَدۡخُلُوۡنَ فِىۡ دِيۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا ۙ (2)

और तुम देखो, लोगों को सेना के सेना (झुंड / समूह में) अल्लाह के दीन (धर्म) में प्रवेश करते हुए।

فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ ؕ

तो अपने पालनहार (रब) की प्रशंसा (स्तुति) के साथ तस्बीह (महिमा, पवित्रता वर्णन) करो, और (उससे) क्षमा मांगो।

اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۞ (3)

निसंदेह वो पश्चाताप (क्षमा / तौबा) स्वीकार करने वाला है।

سُورَةُ الْمَسَدِ مَكِّيَّةٌ

सूरह मसद मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ط (1)

टूट गए दो (दोनों) हाथ अबू लहब के, और वह (स्वयं) बर्बाद हुआ।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ط (2)

ना उसका धन (माल) उसके काम आया और (ना, वो) जो उसने अर्जित किया।

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ج (3)

शीघ्र (जल्द) ही वह झुलसेगा (प्रवेश करेगा) लपटों (ज्वालाओं) वाली आग में।

وَّامْرَاَتُهٗ ط صلے حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ج (4)

और उसकी स्त्री (पत्नी) [भी], ईंधन (लकड़ियाँ) ढोने वाली।

فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ع (5)

उसकी गर्दन में मूंज (खजूर की छाल) से (बनी) रस्सी होगी ।

سُورَةُ الْإِخْلَاص مَكِّيَّةٌ

सूरह इख़लास मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ (1)

कहो! (कि) वह अल्लाह एक (अद्वितीय / यकता) है।

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ (2)

अल्लाह सर्वथा निर्भर-रहित (अनाश्रित; सर्वावलंब) है।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ (3)

ना उसने (किसी को) जना, और ना वह (किसी से) जना गया।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ (4)

और ना कोई भी उसके समकक्ष (बराबर) है।

سُورَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

सूरह फ़लक़ मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

[आरंभ (शुरू)] अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ (1)

कहो: मैं शरण (पनाह) मांगता हूँ, प्रभात (सुबह) के पालनहार (मालिक) की।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ (2)

(हर उस चीज़ की) बुराई से, जो उसने रची है।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ (3)

और अंधेरी (रात्रि) की बुराई से, जब वह (उसका अंधकार) छा जाए।

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ (4)

और गाँठों में फूँक मारने वाली (स्त्रियों) की बुराई से।

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۧ (5)

और ईर्ष्या करने वाले की बुराई से, जब (वह) ईर्ष्या करे।

سُوْرَةُ النَّاس مَكِّيَّةٌ

सूरह नास मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ (1)

कहो: (कि) मैं शरण मांगता हूं लोगों के पालनहार की।

مَلِكِ النَّاسِ ۙ (2)

लोगों के अधिपति (वास्तविक राजा) की

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ (3)

लोगों के उपास्य (माबूद) की।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ (4)

(मन में) कुटिल फुसफुसाहट (दुष्प्रेरणा) डालने (और) पीछे हटने वाले (शैतान) की बुराई से

الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ (5)

जो लोगों के (सीने / हृदय) में कुटिल फुसफुसाहट (दुष्प्रेरणा) डालता है।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ع (6)

(चाहे वो) जिन्नातों में से हो या इंसानों में से।